प्रिय बंधु,

बिहार शरीफ (भारत) में स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर की संकल्पना —— पूर्व–योग्यता

भारत के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की ओर से, हमें बिहार राज्य के बिहार शरीफ नगर में एक स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर की निर्माण–परियोजना की घोषणा करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह उपासना मन्दिर उन पांच स्थानीय बहाई मन्दिरों में से एक होगा जिनका पूरे विश्व के विभिन्न देशों में निर्माण किए जाने की योजना है और जो आठ महाद्वीपीय बहाई उपासना मन्दिरों, जिनका निर्माण कार्य पूरा हो चुका है, और दो राष्ट्रीय उपासना मन्दिरों, जिनके निर्माण की अभी योजना बनाई जा रही है, में शामिल होने वाले हैं।

उत्सुक डिजाइनरों और परामर्शदाता कम्पनियों को 'अभिरुचि–निवेदन' (EOI) के लिए आमंत्रित किया जाता है कि वे भवन–शिल्पी (आर्किटेक्ट) चयन–प्रक्रिया में शामिल होने के लिए अपना निवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। शॉर्टलिस्ट की गई टीम को और अधिक परिचय–सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। वर्तमान में, इस परियोजना की प्रकृति के बारे में आपके विचार के लिए कुछ विस्तृत जानकारी निम्नानुसार हैः

भारत में बहाई धर्म

1844 में बहाई धर्म के आरंभ काल से ही भारत से इस धर्म का एक प्राचीन एवं गहन ऐतिहासिक सम्बंध रहा है। पूरे विश्व के अन्य बहाई समुदायों की तरह, भारत का बहाई समुदाय अपने आप में इस राष्ट्रीय समुदाय की व्यापक विविधता को समेटे हुए है और बहाई धर्म की मूल शिक्षा —— मानवजाति की एकता —— की झलक दिखाता है। वर्तमान समय में, प्रत्येक राज्य में व्याप्त 10000 से भी अधिक स्थानों में, भारत के करीब 20 लाख बहाई इस देश की व्यापक विविधता को प्रतिबिम्बित करते हैं।

अन्य लोगों के साथ मिलकर, भारत के बहाई व्यक्तिगत एवं सामाजिक बदलाव लाने के माध्यम से समाज को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं। जीवन के हर तबके के पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और युवाओं के साथ मिलकर वे साथ–साथ सीखने की दीर्घगामी प्रक्रिया में जुटे हुए हैं। इन सभी कार्यकलापों के लिए उन्हें स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों पर सक्रिय बहाई प्रशासनिक संस्थाओं से मार्गदर्शन एवं संसाधन प्राप्त होते हैं। वर्तमान समय में, भारत के बहाई समुदायों के कार्यकलापों की देखरेख करने वाली शीर्ष राष्ट्रीय संस्था, राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभा, के दिशानिर्देश में 19 क्षेत्रीय/प्रादेशिक एवं लगभग 600 स्थानीय बहाई सभाएं या परिषदें मैत्रीपूर्ण परामर्श के वातावरण में अपने कार्य कर रही हैं। इन प्रयासों के माध्यम से तथा समान विचारधारा वाली अन्य अनेक संस्थाओं से सहयोग करते हुए, भारत के बहाई वर्तमान समाज के सामने खड़ी अनेक चुनौतियों का समाधान करने की दिशा में सीख–समझ रहे हैं, जैसे जाति और वर्ग की संकीर्ण भावना, स्त्री–पुरुष के बीच व्याप्त असमानता, साम्प्रदायिक सद्भाव की कमी, निरक्षरता, शिक्षा का अभाव, हिंसा, गरीबी, भ्रष्टाचार और नैतिक पतन।

परियोजना (प्रोजेक्ट) के बारे में

बहाई धर्म की शिक्षाओं के एक परिचायक के रूप में, बहाई उपासना मन्दिर किसी भी स्थान विशेष के सभी प्रकार के धार्मिक श्रद्धालुओं, हर पृष्ठभूमि या प्रजाति के लोगों, स्त्री–पुरुषों के लिए सामान्य रूप से खुले रहने वाले उपासना–स्थल हैं और आध्यात्मिक यथार्थ के बारे में गहन चिन्तन–मनन का अवसर प्रदान करने वाले आश्रय–स्थल हैं। इसके प्रांगण में स्त्री–पुरुष, बच्चे और युवा सब एक समान हैं।

बहाई धर्म के संस्थापक बहाउल्लाह ने उपासना मन्दिर के कार्य का स्पष्ट चित्रण किया है। उन्होंने हर व्यक्ति को यह आदेश दिया है कि वे प्रभात–काल में अपना ध्यान ईश्वर पर केन्द्रित करें और 'मशरिकुल–अजकार (अर्थात ईश्वर के स्मरण के उदय–स्थल) की ओर अग्रसर हों। उपासना मन्दिर केवल एक भवन नहीं बल्कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। यह जीवन के दो अनिवार्य पहलुओं —— उपासना और सेवा —— का प्रतीक है। बहाई लोग यह मानते हैं कि इन स्वर्गिक मन्दिरों में उनकी आराधना के माध्यम से "ईश्वर की सुरभि का प्रसार होगा" और इसके प्रांगण में एकत्र होने वाले लोगों को अपने दैनिक कार्यकलापों में संलग्न होने से पूर्व आवश्यक दिव्य प्रेरणा प्राप्त होगी।

मन्दिर अपने आप में विशुद्ध रूप से उपासना के उद्देश्य से निर्मित स्थान है किन्तु उसे किसी भी समुदाय के 'आध्यात्मिक केन्द्र' के रूप में देखा जा सकता है जो सामुदायिक जीवन के एक फलते–फूलते ढांचे के निर्माण में योगदान देता है।

डिजाइन सम्बंधी आवश्यक बातें

डिजाइन के आवश्यक तत्वों में से एक यह है कि भवन 'नौमुखी' या नौ द्वारों वाला और गोलाकार होना चाहिए और उसमें एक गुम्बद हो सकता है। डिजाइन ऐसी होनी चाहिए कि उस भवन के केन्द्र में 250 तक की संख्या में मित्र एकत्रित हो सकें और वे बहाई 'आराधना–बिंदु' (यानी 'किब्ले' अर्थात बहाउल्लाह की समाधि जो अभी इजरायल में है, वह स्थल जिस ओर बहाई लोग प्रार्थना के लिए उन्मुख होते हैं) की ओर उन्मुख हों। डिजाइन टीम का आह्वान किया जाएगा कि वे एक ऐसे मन्दिर की संकल्पना प्रस्तुत करें जो "इतना परिपूर्ण हो जितना अस्तित्व के संसार में संभव हो सकता है" –– एक ऐसा मन्दिर जो प्राकृतिक रूप से स्थानीय संस्कृति और उन लोगों के दैनिक जीवन के साथ रचा–बसा प्रतीत होता हो जो उसके प्रांगण में प्रार्थना और चिन्तन के लिए एकत्रित होंगे। इस कार्य के लिए रचनात्मकता की जरूरत है और सुन्दरता, भव्यता, गरिमा, मर्यादा, प्रकार्यता और मितव्ययिता जैसे विविध तत्वों का सम्मिश्रण प्रस्तुत करने वाली कुशलता का।

भवन–शिल्पियों (आर्किटेक्टों) को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह जरूरी नहीं है कि मौजूदा महाद्वीपीय उपासना मन्दिरों – खास तौर पर नई दिल्ली के बहाई उपासना मन्दिर – की शिल्प–शैली का अनुसरण किया जाना चाहिए।

अभिरुचि–निवेदन (EOI) की आवश्यक बातें

इस प्रोजेक्ट की प्रकृति और उसकी अपेक्षाओं तथा व्यावहारिक आवश्यकताओं पर विचार करने के बाद, यदि आप डिजाइन चयन–प्रक्रिया में शामिल होने में अपनी अभिरुचि प्रकट करना चाहते/चाहती हों तो आप निम्नांकित प्रस्तुतियों के साथ आमंत्रित हैं:

- अपनी परामर्शदाता कम्पनी (कन्सल्टिंग फर्म) के विवरण।
- आपकी फर्म की सक्षमता सम्बंधी अभिकथन और इस तरह के प्रोजेक्ट के संचालन के लिए आपके पास उपलब्ध संसाधन।
- परियोजना में आपकी अभिरुचि के बारे में अभिकथन (A4 साइज के 1 पेज से ज्यादा बड़ा नहीं) जिसमें इस प्रोजेक्ट के बारे में आपके विचार और उस मन्दिर के प्रांगण में प्रार्थना करने वाले लोगों की संस्कृति और जीवन–पद्धति के अनुरूप डिजाइन तैयार करने सम्बंधी आपकी विधि/सोच की रूपरेखा प्रस्तुत की गई हो। इसके अलावा, सुन्दरता, भव्यता, गरिमा, मर्यादा, प्रकार्यता और मितव्ययिता जैसे विविध तत्वों का सम्मिश्रण करने वाली परियोजना को क्रियान्वित करना आपके लिए क्या अर्थ रखता है?
- अवधारणा (कन्सेप्ट) की पहचान के लिए आपके द्वारा अपनाए जा सकने वाले संभावित तौर–तरीके।
- समुदाय के साथ कार्य करने के क्रम में आपके द्वारा अपनाए जा सकने वाले तौर–तरीके, जिसमें (यदि हो तो) प्रोजेक्ट का उदाहरण भी शामिल करें।

अभिरुचि–निवेदन (EOI) की प्रस्तुति

वांछित/प्रासंगिक जानकारियों के साथ लिखित अभिरुचि–निवेदन हिन्दी या अंग्रेजी में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। सभी प्रस्तुतियां नीचे दिए गए ईमेल पते पर 20 जून को 16:00 बजे तक अवश्य प्राप्त हो जानी चाहिए। इसके बाद प्राप्त होने वाली प्रस्तुतियों पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रस्तुति किए जाने तक हर तरह की पूछताछ इस पते पर की जानी चाहिए:

Email: biharsharifbhw@ibnc.in

अभिरुचि–निवेदन (EOI) की समीक्षा

परामर्शदाता कम्पनियों द्वारा दी गई जानकारी का उपयोग पूर्व–योग्यता शॉर्टलिस्ट तैयार करने के लिए किया जाएगा और उन्हें 6 सप्ताह के अन्दर ईमेल से सूचित कर दिया जाएगा। शॉर्टलिस्ट की गई डिजाइन टीमों को आगे और अधिक परिचयात्मक सामग्री दी जाएगी ताकि वे प्रस्तुत किए जाने के लिए आरंभिक अवधारणा तैयार

कर सकें। भागीदारी की पुष्टि हो जाने के बाद, परियोजना के दायरे के बारे में आगे की चर्चा के लिए हम आपसे मिलने का निवेदन कर सकते हैं।

भारत के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा किसी भी शॉर्टलिस्ट किए गए निविदाकार के प्रति बाध्य नहीं है और बिना कोई दायित्व स्वीकार किए, बिना कारण बताए, किसी भी समय चयन–प्रक्रिया को निरस्त या संशोधित करने का अधिकार उसके पास सुरक्षित है।

भारत के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा